International Journal of Applied Research 2022; 8(7): 501-503

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2022; 8(7): 501-503
www.allresearchjournal.com
Received: 08-05-2022
Accepted: 10-06-2022

डॉ. नविता
Ward No 1, Master Colony, Railway Road, Mahendragarh, Haryana, India

Corresponding Author:
डॉ. नविता
Ward No 1, Master Colony, Railway Road, Mahendragarh, Haryana, India

भारत के आधुनिक राष्ट्रवाद में स्वामी विवेकानन्द की भूमिका पर एक अध्ययन

डॉ. नविता

सारांश
भारत में बौद्धिक पुनर्जागरण आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के उदय का एक महत्वपूर्ण कारक था। भारतीय आत्मा के जागरण की सृजनात्मक अभिव्यक्ति सर्वप्रथम दर्शन, धर्म एवं संस्कृति के क्षेत्रों में हुई। देश के अतीत को पुनर्जीवित करने की यह भावना आक्रामक तथा अहंकारपूर्ण विदेशी सभ्यता की महान चुनौती के विरूद्ध प्रक्रिया के रूप में उत्पन्न हुई। चूँकि यह सभ्यता राजनीतिक दृष्टि से अत्यन्त प्रभावी और आर्थिक दृष्टि से सबल थी, इसीलिए उसके प्रति प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक था। पश्चिमी यांत्रिक सभ्यता तथा भारतीय धार्मिक पुन्योमुखी संस्कृतियों के बीच संघर्ष से नये भारत का उदय हुआ।

कूटशब्द: पुनर्जागरण, सृजनात्मक, सभ्यता, पश्चिमी यांत्रिक

प्रस्तावना
स्वामी विवेकानन्द (1863–1902) का जन्म ऐसे समय में हुआ था जब भारत ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अधीन गुलामी के बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। उस समय देश राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में संकटकाल से गुजर रहा था, क्योंकि साम्राज्यवादी ताकतें हर तरीके से भारतीयों को कुचल रही थी अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य देश के संसाधनों पर अपना अधिकार स्थापित करना तथा उनका अधिकाधिक दोहन करना बन गया था। इससे भारत का भारी नुकसान हो रहा था। अंग्रेजों की ऐसी नीतियों का नतीजा यह निकला कि भारत में आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास के सभी रास्ते अवरुद्ध हो गए।
स्वामी विवेकानन्द का प्रादुर्भाव बंगाल में ऐसे समय में हुआ था जब भारत में औपनिवेशिक राज के विरुद्ध परम्परागत तरीकों के साथ की गई एक विफल क्रान्ति (1857 का विद्रोह) के बाद साम्राज्यवाद–विरोधी विचार नए रूपों में जन्म ले रहे थें। यह भारतीय इतिहास का वह समय था जब देश में सांस्कृतिक पुर्नजागरण हो रहा था। इस दौरान देश में कई सामाजिक सुधार संस्थाओं का उदय हुआ जैसे ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज, सत्यशोधक समाज, आर्य समाज आदि। इन संस्थाओं ने भारतीय समाज, धर्म और संस्कृति में नवजीवन का संचार करने हेतु कई आन्दोलन चलाए जिनके चलते भारतीयों में जागरण एवं जुझारूपन बढ़ा। जिसका काफी प्रभाव विवेकानन्द के व्यक्तित्व पर पड़ा। बंगाल में उस समय राष्ट्रवादी विचारधारा भी जन्म ले रही थी। इस वजह से जिस वातावरण में विवेकानन्द ने अपने जीवन के आरम्भिक दिन गुजारे, उसके चलते उनमें क्रान्तिकारी वैचारिक जज्बा उत्पन्न हुआ।
वस्तुतः 19वीं शताब्दी में उभरे पुनर्जागरण एवं सुधार आन्दोलनों ने भारत में धार्मिक व सामाजिक सुधार के साथ–साथ राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। इन आन्दोलनों ने ही देश में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उभार का मार्ग प्रशस्त किया। ऐसे में स्वामी विवेकानन्द द्वारा रामकृष्ण मिशन की स्थापना तथा उनके सुधार आन्दोलन की पृष्ठभूमि को तैयार करने में उस समय चल रहा भारतीय पुनर्जागरण आन्दोलन एक बड़ा महत्त्वपूर्ण उत्प्रेरक था।
विवेकानंद जी का राष्ट्रवाद सार्वभौमिकता और मानवता पर आधारित है।उनका मानना था कि हर देश में एक ऐसा प्रभावी सिद्धांत होना चाहिए जो उस देश के जीवन में सम्पूर्ण रूप से परिलक्षित होता है जो भारत के लिए यह धर्म था। धर्मनिरपेक्षता पर आधारित पश्चिमीराष्ट्रवाद के विपरीत स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रवाद धर्म,भारतीय आध्यात्मिकता और नैतिकता पर स्थित था। भारत में सभी धार्मिक शक्तियों का संगम आध्यात्मिकता है। यह माना जाता है कि यह इन सभी शक्तिओं को राष्ट्रीय धारा में समाहित करने में सक्षम है। उन्होंने मानवतावाद और सार्वभौमिकता के आदर्शों को भी राष्ट्रवाद के आधार के रूप में स्वीकार किया।

इन आदर्शों ने जनता का स्वयं के बंधनों और उनके परिणामों के दुखों से मुक्त होने के लिए मार्गदर्शन किया है।12 जनवरी 1863 को कलकत्ता मे नरेन्द्रनाथ का जन्म हुआ तथा स्वामी रामकृष्ण परमहंस के संपर्क में आकर बालक नरेन्द्रनाथ से स्वामी विवेकानंद बन गये। सबसे महत्वपूर्ण धटना शिकागो विश्व धर्मसंसद में धर्म और राष्ट्रवाद पर दिया गया स्वामी जी का भाषाण हैं।

1893 में अमेरिका के शिकागो नामक शहर में हो रहे विश्व धर्म सम्मेलन में विवेकानन्द हिन्दू धर्म के प्रतिनिधि के रूप में गए। उस समय पश्चिमी देशों में भारतीयों को प्रायः हेय दृष्टि से देखा जाता था। एक अमेरिकी प्रोफेसर जार्ज व्हेल के प्रयासों से उन्हें उस सम्मेलन में बोलने का मौका प्राप्त हुआ। विवेकानन्द जी ने अपने भाषण में श्रोताओं को 'भाईयों एवं बहनों' कहकर संबोधित किया। उनके आत्मीयता भरे इन आरम्भिक शब्दों ने ही अमेरिकी श्रोताओं का दिल जीत लिया। इसके बाद उन्होंने अपने भाषण में सहिष्णुतावाद एवं सार्वभौमवाद पर आधारित हिन्दू धार्मिक दर्शन को स्पष्ट किया। उन्होंने *ऋग्वेद* को उद्धृत करते हुए कहा कि जिस प्रकार विभिन्न नदियां यहां–वहां से निकल कर अन्ततः समुद्र में जा मिलती हैं, उसी प्रकार संभी धर्म एवं मत भी अन्ततः एक ही सत्य तक पहुंच जाते हैं। अर्थात् सभी धर्म अपने आप में श्रेष्ठ हैं और ये हमें अलग–अलग तरीकों से सत्य तक पहुंचने का मार्ग बतलाते हैं। जहां सम्मलेन में आये अन्य प्रतिनिधि अपने–अपने धर्मों का गुणगान कर रहे थें, वहीं विवेकानन्द जी ने हिन्दू दर्शन के मतानुसार सभी धर्मों को सही बता कर अमेरिकी लोगों का आश्चर्यचकित कर दिया। वस्तुतः उनका सार्वभौम धर्म का विचार धर्मनिरपेक्षता की ओर बढ़ रहे अमेरिकी लोगों की सोच के काफी करीब था। इसलिए वे उनके कायल हो गए। विवेकानन्द जी ने अपने इस चर्चित भाषाण से सिद्ध कर दिया कि हिन्दू धर्म एक महान धर्म है क्योंकि इसमें सभी धर्मों व मतों के विचारों को समान आदर देने व उन्हें अपने अन्दर समाहित करने की क्षमता रखता है। इस प्रकार स्वामी जी ने सात समुद्र–पार भारतीय संस्कृति का ध्वज लहराया।

राष्ट्रवाद के सम्बन्ध में विवेकानन्द की समझ एवं विचारों को सुबोधचन्द्र सेनगुप्ता नामक एक अन्य विद्वान ने भी समझने का प्रयास किया है। सेनगुप्ता अपनी पुस्तक विवेकानन्द एण्ड नेशनलीज्म में लिखते हैं कि विवेकानन्द का राष्ट्रवाद ऐसा नहीं था जैसे रूसो, कार्ल मार्क्स या लेनिन का था। उनका राष्ट्रवाद तो ऐसा था जहां सभी लोगों की "राष्ट्रीय जीवन में सक्रिय भागीदारी" हो, जहां सभी को समान समझा जाए, सभी में भाईचारा हो तथा सभी में आत्मीयता व प्रेम हो। वस्तुतः विवेकानन्द अपने देश एवं उसके सभी लोगों से बहुत प्यार करते थें। यह इसी तथ्य से जाहिर होता है कि वर्ण व्यवस्था को सही मानते हुए भी उन्होंने जातिवाद व छुआछूत का खण्डन किया क्योंकि वे सभी व्यक्तियों को समान दृष्टि से देखते थें।

इस प्रकार हम पाते हैं कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद सम्बन्धी विवेकानन्द के दृष्टिकोण को कुछ विद्वानों ने समझा है। लेकिन आधुनिक भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उदय में विवेकानन्द के योगदान को वे व्यापक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में तथा समग्र रूप से समझने में अधिक कामयाब नहीं हुए हैं। प्रस्तुत शोध में इस विषय को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में एवं गहराई से समझने के लिए एक विनम्र प्रयास किया गया है।

साहित्य पुनरावलोकन

शोधकर्ता ने अपनी समस्या से संबंधित सामग्री हेतु विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं पुस्तकों, ज्ञानकोषों आदि का अध्ययन किया है। शोधकर्ता ने इसी उद्देश्य से समस्या का चयन करने के पश्चात् संबंधित शोध के बारे में विभिन्न विद्वानों द्वारा किये गये शोध कार्यों का अध्ययन व संकलन किया है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य के लिए शोधकर्ता द्वारा समस्या से संबंधित किये गये अध्ययन का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है –

रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अपनी पुस्तक 'संस्कृति के अध्याय' में लिखा है कि दृ''अभिनव भारत को जो कुछ कहना था वह विवेकानन्द के मुख से उद्गीर्ण हुआ। अभिनव भारत को जिस दिशा की ओर जाना था, उसका स्पष्ट संकेत विवेकानन्द ने दिया। विवेकानन्द वह सेतु हैं, जिस पर प्राचीन और नवीन भारत परस्पर आलिंगन करते हैं। विवेकानन्द वह समुद्र हैं, जिसमें धर्म और राजनीति, राष्ट्रीयता और अंतराष्ट्रीयता तथा उपनिषद् और विज्ञान, सबके सब समाहित होते हैं।''

रवीन्द्रनाथ ने कहा है, 'यदि काई भारत को समझना चाहता है, तो उसे विवेकानन्द को पढ़ना चाहिए।'' महर्षि अरविंद का वचन है कि 'पश्चिमी जगत में विवेकानन्द को जो सफलता मिली, वही इस बात का प्रमाण है कि भारत केवल मृत्यु से बचने को नहीं जगा है, वरन वह विश्व विजय करके दम लेगा।'' वक्षी, एस0एस0 एवं शर्मा, के0सी0 द्वारा अनुवादित पुस्तक''इन साइक्लोपिडिया ऑफ इण्डियन नेशनलिज्म'' में लिखा है कि स्वामी विवेकानंद भारतीय राष्ट्रवाद के अग्रणी चिंतक थे। उनका राष्ट्रवाद भारतीय संस्कृति की मूल अवधारणाओं से संबंधित है।उनका कहना था कि राष्ट्रप्रेम के बिना जीवन अधूरा है।

सिंह, विरेन्द्र कुमार ने अपनी पुस्तक ''इनसाइक्लोपीडिया ऑफ इण्डियन फ्रीडम फाइट्र्स'' में लिखा है कि स्वामी विवेकानंद के चिंतन का भारतीय राष्ट्रवाद अब पूर्ण रू‍ से भारत में नहीं रह गया है। स्वामी जी के चिंतन का राष्ट्रवाद विश्व प्रेम पर आधारित है। आज क्षेत्रिय दल एवं क्षेत्रिय राजनीतिकके कारण राष्ट्रवाद की अवधारणा को आघात पहुँचा है।

सरकार, सुमित ने अपनी पुस्तक ''मॉडर्न इण्डिया 1885–1947'' में लिखा है कि भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म स्वामीजी के शिकागों अभिव्यक्ति का एक स्पष्ट उदाहरण है। सभी धर्मों को साथ लेकर चलने की अवधारणा स्वामी विवेकानंद के राष्ट्रवाद में निहित है।

शोध अध्ययन के उद्देष्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नांकित उद्देश्य हैं –

1. स्वामी विवेकानन्द जी के जीवन परिचय और बहुमुखी व्यक्तित्व के विषय में जानकारी प्राप्त करना।
2. स्वामी विवेकानन्द जी के राष्ट्रवाद सम्बन्धि विचारों का अध्ययन करना।
3. वर्तमान युग में स्वामी विवेकानन्द जी के राष्ट्रवाद सम्बन्धि विचारों की उपादेयता एवं प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

शोध विधि एव आंकड़ों का संग्रहण

प्रस्तुत शोध–पत्र में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक तथा ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग किया गया है। यंह शोध कार्य पूर्णतयः द्वितीय आकडो पर आधारित है। इस अध्ययन के लिए यथा– प्रकाशित पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकों, दस्तावेजों एवं लेखों का उपयोग किया गया है।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानन्द के प्रादुर्भाव के समय अर्थात् 19वीं शताब्दी में भारत औपनिवेशिक पराधीनता का शिकार बन चुका था। साथ ही यह देश सामाजिक–आर्थिक दृष्टि से भी पतनोन्मुख हालात से जूझ रहा था। समूचा भारतीय समाज, विशेषकर हिन्दू समाज, पूरी तरह धार्मिक रूढ़िवाद एवं तरह–तरह के अन्धविश्वासों के जाल में जकड़ा हुआ था। तत्कालीन हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में महान पाश्चात्य सामाजिक चिन्तक मैक्स वेबर ने लिखा है, "हिन्दू धर्म दरअसल जादू–टोना, अन्धविश्वास और अध्यात्मवाद की खिचड़ी बनकर रह गया था।

विवेकानन्द ने राष्ट्र–निर्माण हेतु ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग का आदर्श प्रतिपादित किया और हिन्दू धर्म के मानवतावादी एवं

सार्वभौमिक मूल्यों को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि धर्माचरण दरिद्रता में संभव नहीं है। वस्तुतः दरिद्रता निवारण ही सच्चा मानव धर्म है। वस्तुतः विवेकानन्द एक समन्वयवादी सुधारक थें। भारतीय अध्यात्म का पाश्चात्य भौतिकवाद के साथ तथा भारतीय वेदान्त का पाश्चात्य विज्ञान के साथ समन्वय करके वे एक ऐसे आदर्श मानव समाज की स्थापना पर जोर देते थें जिसमें असमानता, अन्याय, शोषण, निरंकुशता, गुलामी आदि का कोई स्थान न हो। कुल मिलाकर विवेकानन्द की शिक्षाओं ने भारतवासियों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की चेतना को सींचा जिसके चलते वे राष्ट्रीय स्वतंत्रता के महत्त्व को समझने लगें।

सन्दर्भ सूची

1. अल्तेकर, ए॰ एस॰, द पोजिशन ऑफ वीमेन इन हिन्दू सिविलाईजेशन, मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर, बनारस, 1951.
2. अशरफ, के॰ एम॰, लाइफ एण्ड कन्डीशन्स ऑफ दी पीपुल ऑफ हिन्दुस्तान, गयान पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2001.
3. अरोड़ा वी॰ के॰, सोशल एण्ड पॉलिटिक्ल फिलॉसफी ऑफ स्वामी विवेकानन्दा, पुन्थी पुस्तक पब्लिकेशन्स, 1968.
4. आदिश्वरनन्द, स्वामी विवेकानन्द : ए वर्ल्ड टीचर, वरमेन्ट प्रकाशन दिल्ली, 2006.
5. उपाध्याय पूनम, सोशल, पॉलिटिक्ल, इकॉनामिक एण्ड एजुकेशनल आईडियाज ऑफ राजाराम मोहन राय, दिल्ली
6. कॉलेट, एस॰ डी॰, द लाइफ एण्ड लैटर्स ऑफ राजा राममोहन राय, कलकत्ता, 1900.
7. कश्यप, शैलेन्द्र, सेविगं हयुमेनटी : स्वामी विवेकानन्द प्रोस्पेक्टिव, विवेकानन्द स्वाध्याय मण्डल, दिल्ली, 2012.
8. क्रिश्चियन, वी॰ डी॰, फिलोसफी ऑफ ए रिलिजियस लीडर, ग्रीनबुड पब्लिकेशन, लन्दन, 1999. किशोर, बी॰ आर॰, स्वामी विवेकानन्दा, रामकृष्ण मिशन, कलकत्ता, 1997.
9. गोखले, बी॰ जी॰, स्वामी विवेकानन्द एण्ड इण्डिया, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी, 1964.
10. गुप्त, कांति प्रसन्न सेन, दि क्रिश्चियन मिशनरीज इन बंगाल, कलकता, 1971.
11. Bakshi SR, Sharma KC. (ed.) Encyclopedia of Indian Nationalism, Vista International Publishing House, New Delhi, 2007, 9.
12. Sarkar Sumit. Modern India 1885-1947, Mac MillanIndia Press, Madras, 1983.
13. Singh Birendra Kumar. Encyclopedia of IndianFreedom Fighters, Centrum Press, New Delhi, 2011, 8.